ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 13 अंकः 150 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका नवम्बर 2020

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के 95 वें अवतरण दिवस पर उनके पावन चरणों में कोटि- कोटि नमन्।

AVSK जोधपुर - हिन्दी-अंग्रेजी मासिक पत्रिका, नवम्बर 2020
Web: www.the-comforter.org YouTube: Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 13 अंक: 150 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका नवम्बर 2020

अनुक्रम

❖ संस्थापक एवं संरक्षक:
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖ सम्पादक:
रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

वैदिक दर्शन का अंतिम और पूर्ण विकास....4
भागवत सत्ता का भूमण्डल पर अवतरण (सम्पादकीय) 5-7
साधना विषयक बातें....8-10
परम पुरुष को प्राप्त होना ही 'मोक्ष' है। 11
यादों के पल 12
गुरुदेव का प्रवचन (22 मई 2003) 13-14
रूपान्तरण (Transformation)....15-17
अनुभूतियाँ....18-22
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से 23-25
मानस की नीरवता....26-27
भक्त प्रहलाद की कथा 28-30
योग के आधार 31
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 32
ईश्वर आपके साथ है 33
कल्कि अवतार 34
विशेष सूचना 35
ध्यान की विधि 36
अनुग्रहकर्ता-सद्गुरुदेव 37

वैदिक दर्शन का अंतिम और पूर्ण विकास

हमारी संस्कृति और पश्चिम की संस्कृति में रात-दिन का अंतर है। हमारी भाषा जितनी परिष्कृत है, पश्चिम में उसके लिए कोई मूल (Proper) शब्द नहीं है। अब धर्म को उन्होंने Religion कह दिया। Religion तो बदल देते हैं परन्तु धर्म को बदल ही नहीं सकते, वो तो धारण करने की चीज है। धन के लालच में कुछ लोग धर्म को बदल रहे हैं मगर धर्म तो बदला ही नहीं जा सकता, Religion बदला जा सकता है। आज जो यहाँ (गुरुदेव सियाग सिद्धयोग) हो रहा है, कोई साधारण घटना नहीं हो रही है। ये वैदिक दर्शन का अंतिम और पूर्ण विकास है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

भागवत सत्ता का भूमण्डल पर अवतरण

''स्पिरिचुअल-साइंस'' का 150 वाँ अंक आपके हाथों में है। गुरुदेव की असीम कृपा से और आप सब गुरुभाईयों के अथक प्रयासों से अध्यात्म विज्ञान का दिव्य आलोक सम्पूर्ण विश्व में फैल रहा है। गुरुदेव का दिव्य दर्शन जन मानस के हृदय पटल पर सहज में उतर रहा है। इस मासिक पत्रिका ने, जिसे गुरुदेव 'अखबार' कहते थे, खूब उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

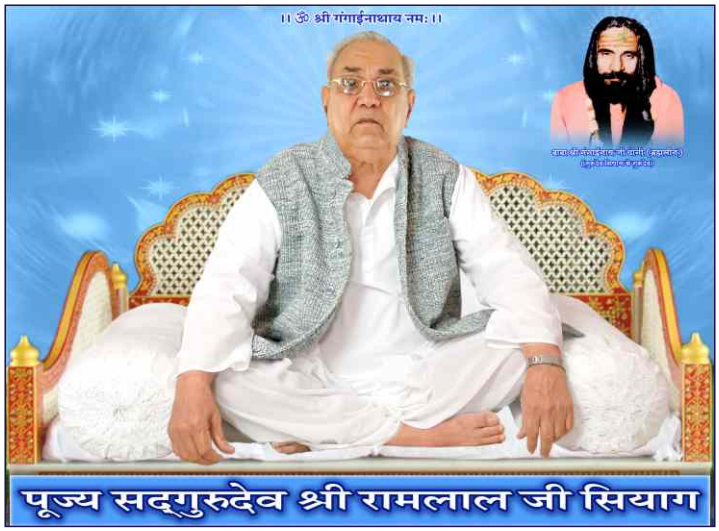

हम सभी हर वर्ष दीपों का पर्व दीपावली हर्षोल्लास से मनाते आ रहे हैं। 10 हजार साल पहले अनीति और अन्यायी रावण पर विजय प्राप्त कर भगवान् श्री राम, सीताजी के साथ वापस अयोध्या पधारे थे, उस दिन वहाँ की जनता ने दीप जलाकर भगवान् श्री राम व सीताजी का भव्य स्वागत किया था। उसी दिन की याद में आज भी हम दिवाली पर दीए जलाकर प्रभु श्री राम एवं लक्ष्मी जी की पूजा करते हैं।

दुनिया का ध्यान हमेशा से इतिहास को टटोलता है, पर आगे क्या होगा, इस बात से पूरी दुनिया अनभिज्ञ है। आज दुनिया में लाखों श्रद्धालुगण इस इन्तजार में बैठे हैं कि क्या वो श्री राम, वो श्रीकृष्ण, वो ईसामसीह, वापस अवतरित हो सकते हैं? जब रावण, कंस और दुर्योधन धरती पर होते हैं तो श्रीराम और श्रीकृष्ण भी धरती पर होते हैं। आज मानव की जो स्थिति है, वो बीते युगों से कहीं हजार गुणा ज्यादा भयानक और पतन की ओर अग्रसर है।

हम नें बाहर हजारों दीये जला लिए, खूब मिठाईयाँ बाँट दी परन्तु हमारे मन मन्दिर में प्रकाश एवं मिठास आना अभी भी बाकी है।

हमने भव्य महल खड़े कर दिये, करोड़ों रूपयों के अस्पताल स्थापित कर दिए, लेकिन मानव मन मन्दिर आज सबसे ज्यादा अंधकार व भयावह वातावरण में जी रहा है।

आज मानवीय रिश्तों में प्रेम,

www.the-comforter.org

सहिष्णुता, धैर्य जैसे गुण कहीं खो से गये हैं। रिश्तों के बीच एक दूरी सी है, एक रूखापन सा है।

विज्ञान की हर प्रकार की सुविधाओं के बावजूद इस धरती पर हाहाकार बढ़ता ही जा रहा है, जीवन और चरित्र के सभी मानक ढह रहे हैं, कठिनाइयाँ बढ़ रही हैं और कष्टों का कोई अन्त नहीं। आज का बौखलाया हुआ मानव पूछता है-कहाँ है भगवान? कहाँ है तुम्हारा अतिमानस और कहाँ है उनकी नई सृष्टि? हालत तो पहले से भी अधिक खराब होती जा रही है।

लेकिन इस बौखलाहट में हम यह भूल जाते है कि अभी हमारी आँखें केवल कंस और रावण को, तथा उनके अत्याचारों को ही देख रही हैं, जिससे हम भयभीत और त्रसित हैं। बालकृष्ण हमारी दृष्टि से ओझल हैं और अभी हम उनकी ओर से अनभिज्ञ हैं। महाभारत के इस महाविनाश के पीछे एक नई सृष्टि का बीज डाला जा चुका है और वर्तमान में घनघोर निशा का अंधकार ही इस बात का प्रमाण है कि उषा का आगमन अवश्यम्भावी है।

भौतिक सूर्य से कहीं हजारों गुणा अधिक आलोक लिए, तेजस्वी व ओजपूर्ण सूर्य उदय हो चुका है, जिसकी पहली किरण भारत के पश्चिम भाग पर पड़ी है।

श्री अरविन्द कहते हैं कि जब गहन अंधकार से इस धरती का दम घुटने लगता है, जब मानव के पास केवल उसका भौतिक मन रूपी टिमटिमाता हुआ दीप ही बचा रहता है तभी-भगवान् चुपके से एक चोर के सदृश अपने मन्दिर में प्रविष्ट हो जाते हैं और उनके प्रविष्ट होते ही जीवन के सभी द्वार शोभा और माधुर्य से उद्घाटित हो जाते हैं, सत्य की परम ज्योति हमें अधिकृत कर लेती है और हमारे दिवस एक सुखमय तीर्थयात्रा बन जाते हैं।

निश्चय ही इस समय हम एक नये युग और एक नई सृष्टि की सन्धिवेला में हैं। इसलिये कष्ट तो होगा ही, कठिनाइयाँ भी अपरिहार्य हैं। परन्तु श्रीमाँ के शब्दो में 'जितनी बड़ी कठिनाई उतनी ही बड़ी विजय।' तथा कठिनाइयाँ तो जीते जाने के लिये ही बनी थी और यदि परम दिव्य शक्ति का अस्तित्व हैं तो वे दूर होंगी ही।'

अस्तु हम निराश न हों, धैर्य बनाये रखें, अभीप्सा की लौ जलाये रहें और पूज्य सद्गुरुदेव को पुकारते रहें, यह अप्रत्याशित की घड़ी है। श्री अरविन्द इस सम्बन्ध में हमें सचेत करते है:-

'केवल सद्गुरुदेव की ही शक्ति, कोई मानवी प्रयास और तपस्या नहीं, आच्छादन को छिन्न और आवरण को विदीर्ण

www.the-comforter.org

कर, पात्र को सही स्वरूप में गढ़ सकती है और इस अन्धकार, असत्य, मृत्यु और क्लेश के जगत् में ला सकती है- सत्य, प्रकाश, दिव्य जीवन और अमृतत्व का आनन्द।' मन मन्दिर के अन्धकार को मिटाने के लिए त्रिवेणी संगम में सद्गुरु का ध्यान कर, दिव्य ज्योति जगानी होगी।

इस अंधकार युक्त खाई को पाटने के लिए हम सब को गुरुदेव के सच्चे यंत्र बनकर तन-मन- धन से सनातन धर्म का शुभ संदेश सम्पूर्ण मानव जाति में पहुँचाने का कार्य करना होगा।

वो भागवत सत्ता इस धरा पर है। महर्षि अरविन्द ने कहा है - ''24 नवम्बर 1926 को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं है। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनंद के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनंदमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनंद की ओर उद्बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।''

पूज्य सद्गुरुदेव की दिव्य तस्वीर पर ध्यान करने से साधकों को स्वतः ही अद्भुत योग हो रहा है, वह सृष्टिकाल से आज तक की हुई एक अद्वितीय व अनुपम घटना है। एक निर्जीव चित्र किसी सजीव पर प्रभाव डालकर उसको अपने नियंत्रण में कर ले, ऐसा आज तक नहीं हुआ। यह भारतीय सिद्धयोग दर्शन की शुरूआत है। अभी शिखार तक पहुँचना बाकी है।

आज गुरुदेव की तस्वीर से भारत सहित पूरे विश्व में साधक- गण ध्यान कर रहे हैं। लाखों लोग केवल सोशल मीडिया पर गुरुदेव को देखकर ध्यान कर प्रत्यक्षानुभूति कर रहे हैं।

कभी भी हिम्मत हारे नहीं बल्कि गुरुदेव की आराधना करते हुए अपने पथ पर निरन्तर चलते रहें, सफलता अवश्य चरण चूमेगी।

-संपादक

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करे। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सके।

'न' के लिखे पत्र में 'सफेद प्रकाश' और 'अग्निल प्रकाश' के सामने यथाक्रम श्री अरविन्द ने लिखा, 'भागवत चैतन्य का प्रकाश' एवं Aspiration (अभीप्सा) और तपस्या का प्रकाश'।

सोने की डोरी-शक्ति के साथ सत्य चेतना का संबंध। सोने का गुलाब-सत्य चैतन्यमय प्रेम और समर्पण। सफेद कमल-मां की चेतना (Divine Consciousness) Higher Mind (उच्चतर मन) और Psychic (चैत्य) में खुल रही है। चक्र का अर्थ है निम्न स्तर में मां की शक्ति काम कर रही है। एक हीरक प्रकाश है शक्ति का प्रकाश At its Strongest (अपने प्रखर

रूप में)-यदि साधक अच्छी अवस्था में हो तो इस तरह से शक्ति के शरीर से निकल साधक के ऊपर पड़ना बहुत स्वाभाविक है।

किसी भी साधक के बारे में आलोचना करना अच्छा नहीं। इससे किसी का भला नहीं होता, वरन् अनिष्ट ही होता है। सब ऐसा करते हैं। किंतु इससे atmosphere troubled (वातावरण मलिन) होता है, साधना की हानि होती है। इससे शक्ति के बारे में सोचना, योग या अन्य अच्छी बातों के बारे में बोलना ज्यादा अच्छा है।

बड़े-बड़े साधकों को भी बाधा आक्रांत कर सकती है, उससे क्या हुआ ? Psychic (चैत्य) अवस्था में रहने पर, शक्ति के साथ युक्त रहने पर इन सब आक्रमणों का प्रयास बराबर हो जाता है।

www.the-comforter.org

– नीला तो Higher Mind (उच्चतर मन) का वर्ण है–नील पद्म है तुम्हारी चेतना में ऊर्ध्व चेतना का उन्मीलन। हो सकता है कि शरीर में ध्यान करने के लिये कुछ बाधा हो जिससे वह बैठना नहीं चाहता। बहुत-से लोगों के साथ ऐसा भी होता है कि साधना अपने-आप चलती है, जबर्दस्ती ध्यान में बैठना और नहीं होता, किंतु वैसे चलते-फिरते, सोते-जागते साधना चलती है।

प्रश्नः– देखा कि आधार में एक बहुत बड़ा वृक्ष है जो ऊर्ध्व की ओर बढ़ रहा है।

उत्तरः– वृक्ष है तुम्हारा आध्यात्मिक जीवन जो तुम्हारे अंदर बढ़ना शुरू हुआ है।

– हां, किसी कामना, माँग आदि का पोषण न कर शक्ति को ही पुकारना होता है। उन सबके उठने पर उन्हें प्रश्रय न दे फेंक देना चाहिये। उसके बाद भी प्रकृति के पुराने अभ्यासवश वे आ सकती हैं, लेकिन अंततः वह अभ्यास क्षीण हो जायेगा, और नहीं आयेगा। (काम-शक्ति) मानव-मात्र में है। वह impulse (आवेग) प्रकृति का एक प्रधान यंत्र है जिसके द्वारा वह मनुष्य को चलाती है। संसार, समाज और परिवार का सृजन करती है, मनुष्य का जीवन बहुत-कुछ उसके ऊपर निर्भर करता है। इसलिये सबके अंदर कामावेग है, कोई भी अपवाद नहीं है–साधना करने पर भी यह आवेग छोड़ना नहीं चाहता, आसानी से नहीं छोड़ता। वह प्राणिक शरीर की प्रकृति रूपांतरित होने तक लौट-लौट कर आता है। फिर भी साधक सावधान हो उसको संयत करता है, निराकरण करता है, जितनी बार आये उतनी बार उसे लताड़ देता है–ऐसा करते-करते अंततः यह विलीन हो जाता है।

मेरी बात, जो तुम्हें अनेक बार कही है, भूल न जाना। उतावली न हो स्थिर शांतभाव से साधना करो। इसी से धीरे-धीरे सब सही रास्ते पर आ जायेगा। जोर-जोर से रोना अच्छा नहीं–शांतभाव से शक्ति को पुकारो, उनके प्रति समर्पण करो। प्राण जितना ही शांत होता है, उतनी ही साधना Steadily (धीर गति से) एक पथ पर चलती है।

शांत और सचेतन रहो, शक्ति (गुरु) को पुकारो, अच्छी अवस्था लौट आयेगी। संपूर्ण समर्पण करने में समय लगता है–जहाँ देखो कि नहीं हुआ है उसे भी समर्पित करो–इस तरह करते-करते अंततः संपूर्ण होगा।

It is good (यह अच्छा है)। यदि हृदय शक्ति की ओर खुला रहे तो बाकी सब जल्दी खुल जाता है।

हां, अंदर ही सब कुछ है और वह नाशवान् नहीं–इसलिये बाहरी बाधा-विपत्तियों से विचलित न हो, उस भीतरी सत्य में संस्थित होना होता है और उसके फलस्वरूप बाह्य भी रूपांतरित होगा।

जब खूब गंभीर अवस्था होती है तो उठने और चलने पर इस

www.the-comforter.org

तरह के चक्कर आते हैं-शरीर की दुर्बलता के कारण नहीं, वरन् चेतना भीतर चली गयी, शरीर में पूर्ण चेतना नहीं रही इसलिये। ऐसी अवस्था में चुपचाप बैठे रहना अच्छा है-जब चेतना शरीर में पूरी तरह लौट आये तब उठ सकती हो।

यह बहुत बड़ी opening (उद्घाटन) है-जो सूर्य की ज्योति उतर रही है वह सत्य की ज्योति है-वह सत्य ऊर्ध्व मन से भी बहुत ऊपर है।

मूलाधार है physical का inner centre (भौतिक का अंतर-चक्र), पोखर है चेतना की एक opening या formation (उद्घाटन अथवा आकार)।

प्रश्नः- देखती हूँ कि मूलाधार का लाल कमल धीरे-धीरे खिलता जा रहा है और लगता है उसमें से तुम्हारा प्रकाश भी उतरने लगा है।

उत्तरः- That is very good- (यह बहुत अच्छा है)। वहीं से शरीर-प्रकृति का रूपांतर शुरू होता है।

बाधा तो कुछ खास नहीं है, मनुष्य की बहिर्प्रकृति में जो होती है वही है-वे सब शक्ति की working (क्रिया) द्वारा क्रमशः दूर हो जायेंगी। उसके लिये चिंतित या दुःखित होने का कोई कारण नहीं।

हां, जो कहती हो वह सच ही है। बहिश्चेतना अज्ञानमयी होती है, ऊपर से जो आता है उसका मानो एक गलत transcription (गलत नकल या गलत अनुवाद) करना चाहती है, अपने जैसा बनाना चाहती है, अपने कल्पित भोग या बाहरी सार्थकता या अहंभाव की तृप्ति की ओर घुमाने का प्रयास करती है। यही है मानव स्वभाव की दुर्बलता। भगवान् को भगवान् के लिये ही चाहना होता है, अपनी चरितार्थता के लिये नहीं। जब psychic being (चैत्य पुरुष) भीतर सबल होता है तभी बहिर्प्रकृति के ये सब दोष कम होते-होते अंत में निर्मूल हो जाते हैं।

अज्ञान, अहंकार और कामना ही हैं बाधा-तन, मन, प्राण यदि ऊर्ध्व चेतना के आधार बन जायें तो यह भागवत ज्योति शरीर में उतर सकेगी।

ऊपर का यही जगत् है ऊर्ध्व चेतना का स्तर (plane)। हमारी योग साधना द्वारा उतर रहा है। पार्थिव जगत् आजकल विरोधी प्राण जगत् के तांडव से भरा हुआ और ध्वंसोन्मुख है।

निम्न प्राण और मूलाधार ही हैं कामावेग के स्थान। गले के नीचे है vital mind (प्राणिक मन) का स्थान। अर्थात् जब नीचे कामावेग उठती है तब vital mind में उसी की चिंता या कोई mental (मानसिक) रूप लेने का प्रयास होता है, उससे मन विक्षिप्त-सा हो जाता है।

लगता है बाह्य स्पर्श से यह सब हुआ है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

परम पुरुष को प्राप्त होना ही 'मोक्ष' है।

हमारे सभी संतों ने 'मंत्र जप' को ही एक मात्र सच्चा पथ माना है।

भगवान् श्री कृष्ण 16 कलाओं से युक्त पूर्णावतार थे। प्रश्नोपनिषद में उस परम पुरुष द्वारा लोकों में जिस (16 वें तत्त्व) 'नाम' को रचने की बात कही गई है, उसी के सहारे बाकी सभी तत्त्वों का भेदन करते हुए जीवात्मा का परमात्मा अर्थात् परम पुरुष को प्राप्त होना ही 'मोक्ष' है। शब्दब्रह्म से परब्रह्म को प्राप्त होने के उपर्युक्त सिद्धांत को ही हमारे सभी संतों ने एक मात्र सच्चा पथ माना है। इस संबंध में कबीरदास जी ने कहा है-

छर अच्छर निःअच्छर बूझै, सूझि गुरु परिचावै।
छर परिहरि अच्छर लौ लावै, तब निःअच्छर पावै।।
अच्छर गहै विवेक करि, पावै तहि से भिन्न।
कहै कबीर निःअच्छरहिं, लहै पारखी चीन्ह।।

संत सद्गुरु से प्राप्त शब्द के द्वारा ही साधक उस परमपद को प्राप्त कर सकता है। इस संबंध में उस परमपद पर पहुँचने की विधि बताते हुए, रास्ते में जो आनंद प्राप्त होगा, उसका अति सुन्दर ढंग से वर्णन करते हुए बहुत ही सरल-साधारण भाषा में कबीरदास जी ने कहा है-

प्रथमे सुरति जमावै तिल पर, मूल मंत्र गहि लावै।
गगन गराजै दामिनि दमकै, अनहद नाद बजावै।।1।।
बिन जिम्मा नामहिं को सुमिरै, अमि रस अजर चुवावै।
अजपा लागि रहै सुरति पर, नैन न पलक डुलावै।।2 ।।
गगन मंदिल में फूल फुलाना, उहाँ भंवर रस पावै।
इंगला पिंगला सुखमनि सोधै, प्रेम जोति लौ लावै।।3।।
सुन्न महल में पुरुष विराजै, जहां अमर घर छावै।
कहै कबीर सतगुरु बिनु चीन्हे, कैसे वह घर पावै।।4।।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

यादों के पल...

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम में शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम का एक विहंगम दृश्य – 21 जून 2008

गतांक से आगे...

गुरुदेव का प्रवचन (22 मई 2003)

अभी-अभी एक एड्स का केस ठीक हुआ, तहलका मच गया खासतौर से अमेरिका में। अब हमारा योग जो है, जब मुक्ति की स्थिति में पहुँचाता है तो रोग तो रास्ते में रोड़े हैं, रोड़े। भौतिक समस्याएँ, अनेक तरह की बीमारियाँ, ये तो मतलब उस स्थिति तक पहुँचने के लिये रुकावटें हैं। उसको प्रकृति अपने - आप ठीक करेगी। चाहे आपको कोई बीमारी हो, मगर नाम तो जो मैं बताऊँ वही जपना है उसमें Addition or alteration (इसके अलावा परिवर्तन) नहीं करना है- बस उसी से फैसला होगा।

अब हमारा धर्म देखिये पूर्ण रूप से Scientific (वैज्ञानिक) है, अब बिना किसी दवाई के अंदर कैमिकली परिवर्तन आता है, एड्स क्यों ठीक हो गया? मैं पहले बोलता नहीं था। मैं आपको बताऊँ, एड्स, कैंसर के बारे में, मैं नहीं बोलता था।

अब एक कैंसर ठीक हुआ शुरू-शुरू में।

कैंसर के एक डॉक्टर आर.के. चौधरी मेरे पास आए। वो आज राजस्थान के अजमेर जिले के किसी हॉस्पीटल में Superintendent हैं तो मेरे को कहने लगे ''गुरुजी यह क्या कर रहे हो? यह बड़ी अजीब बात है, मैंने सुना है कई कैंसर केस ठीक हो गये।'' मैंने कहा डॉक्टर साहब आप तो कैंसर के डॉक्टर हो, मैंने बी.बी.सी. से एक न्यूज सुनी थी, 8-9 साल पहले तो उन्होंने कहा था कि कुछ ऐसे जीन्स पैदा हो जाते हैं, ऐसे मनुष्य में विजातिय तत्त्व पैदा हो जाते हैं, जो आदमी के Tissues (ऊत्तक) को आत्म हत्या करने के लिये ऑर्डर देते हैं, हुक्म देते हैं और उनका हुक्म मानकर वो Tissues (ऊत्तक) जो हैं मरने लगते हैं, शरीर गल जाता है, आदमी मर जाता है। मैंने कहा 'यह तो रोग ही इस तरह का है, आप क्या कहते हो आप तो कैंसर के डॉक्टर हो', उन्होंने कहा कि ''मामला तो यही है, हमको नहीं समझ में आ रहा है कि

www.the-comforter.org

कैंसर होने का कारण क्या है? और एड्स का तो कतई समझ में नहीं आ रहा। इसमें तो कीमो थेरेपी दे रहे हैं मगर पार नहीं पड़ रही।'' मैंने कहा फिर हमारी सुन लो आप।

हमारा सिद्धांत कहता है कि जो ब्रह्माण्ड में है वो सारा पिण्ड में है, जब सारा ही अंदर है तो फिर देवता भी अंदर है और राक्षस भी अंदर, दोनो अंदर हैं। एक आदमी में कोई शैतान किसी कारण से प्रभावी हो गया तो वो तो अपना काम करेगा! उसको यह डॉक्टर एड्स, कैंसर, हेपेटाइटिस-बी, पता नहीं क्या-क्या कह देते हैं। मैंने कहा डॉक्टर साहब जिसके यह बीमारी है, देवता भी तो उसी के अंदर बैठा है, किसी कारणवश जिसमें राक्षस चेतन हो गया, देवता प्रभावी हो जाए, वह तो (शक्तिशाली) ज्यादा होता है राक्षस से, तो कह दे मत मान उसका Order (आदेश), उसने Order (आदेश) मानना बंद कर दिया तो क्या होगा? तो डॉक्टर साहब ने कहा फिर तो कैंसर Cure (इलाज) होना चाहिये। उस समय मैंने कहा कि मैं नहीं कह सकता कि

Cure होगा, नहीं होगा, मगर हमारे हिसाब से Curable होना चाहिए। और उसके बाद पता नहीं कितने कैंसर केस Cure हो गये, सौ-दो सौ केस एड्स Cure हो गये। मगर यह एक ऐसी बीमारी है, इसके बारे में एक भ्रांति है कि आदमी उसके चरित्र पर शक करते हैं, इसलिये कोई भी आदमी इसको Out नहीं करना चाहता। अब कई आदमी आए मेरे पास ठीक होकर। जोधपुर का एक जैनी, बहुत पैसे वाली पार्टी, सूरत काम करता था, आया, सारा बताया तो मैंने कहा तो फिर आप रिपोर्ट ला दो, Positive-Negative की तो कहने लगा 'इससे आपको क्या मिलेगा? यह करोड़पताई धूल हो जाएगी, समाज में एक कौड़ी की ईज्जत हो जाएगी। मैंने कहा जा, तू जा, कोई न कोई आएगा। अब एक आदमी आ गया भंवरलाल नाम का। उसको एड्स था। एक मथुरादास माथुर हॉस्पीटल है, जोधपुर में, उसमें एक डॉक्टर प्रोफेसर हैं- अरविंद माथुर करके, वो मेरे शिष्य हैं, सौ-सवा सौ डॉक्टर मेरे शिष्य हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

परमेश्वर ने सृष्टि का सृजन किया और उसमें विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों व पेड़-पौधों आदि का विकास किया। भूमण्डल पर 'मनुष्य', परमेश्वर की सर्वोच्च कृति है, उसमें ज्ञान और विज्ञान की असीम पराकाष्ठा है। प्रत्येक मनुष्य के चेतना का स्तर अलग अलग होता है।

मनुष्य सृष्टि की सर्वोच्च कृति है लेकिन अभी इस कृति में बहुत सारी अपूर्णता है जो अगले विकास में इन अपूर्णताओं को पूर्ण किया जा सकता है और वह है-अतिमानव। एक ऐसा दिव्य मानव जो रोग, शोक, और दुःख-दर्दों से रहित होगा। वर्तमान मानव और अतिमानव में इतना भारी अंतर होगा कि अभी किसी से तुलना, कर ही नहीं सकते। महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार मानव मात्र का दिव्य रूपान्तरण हो जाएगा। इस कार्य के लिए उन्होंने आध्यात्मिक तपस्या करके सृजनकर्ता को, भूमण्डल पर अवतरित होने के लिए करूण पुकार की। नये युग अर्थात् सत्युग के आगमन और नये जगत् के निर्माण के लिए 24 नवम्बर 1926 को भूमण्डल पर परमसत्ता का भौतिक में अवतरण हुआ। उस अवतरित शक्ति ने 1968 से अपना कार्य प्रारम्भ किया। गहन आराधना के बाद मनुष्य मात्र के रूपान्तरण के लिए संजीवनी मंत्र की दीक्षा दी और लाखों लोगों को चेतन कर दिया।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का मुख्य उद्देश्य है-संपूर्ण मानव जाति का दिव्य रूपान्तरण। इस कार्य के लिए उन्होंने जो संजीवनी मंत्र दिया है, उनका बिना कोई पल गँवाएं सघन जाप और नियमित ध्यान करना है। इस कार्य में किसी भी प्रकार की चालाकी, कपटता और अहंकार बाधक ही होगा। सद्गुरु आराधना का पथ बताते हैं, चलना तो शिष्य को ही पड़ता है। सद्गुरु तभी प्रसन्न होते हैं, जब शिष्य आराधना में आगे बढ़ता है।

इस रूपान्तरण के कार्य के लिए श्री अरविन्द ने विस्तार से समझाया है कि यह कैसे पूर्ण होगा? साधकों के ज्ञान-बोध के लिए यह लेख दिया जा रहा है-

www.the-comforter.org

आश्रम के बच्चों के सम्मुख भावी देह की व्याख्या करते हुए श्री माँ ने एक बार बताया था ...रूपांतर का मतलब है कि इस सारी निरी भौतिक व्यवस्था की जगह शक्ति के अनेक संकेन्द्रण होंगे, जिनमें प्रत्येक का भिन्न प्रकार का स्पंद होगा। फिर अंगों की जगह सचेतन संकल्प द्वारा संचालित सचेतन ऊर्जा के केन्द्र कार्य करेंगे। न उदर रहेगा न हृदय, न रक्त संचार, न फेफड़े। ये सब लुप्त हो जायेंगे

और इनका स्थान लेंगी स्पंदों की गतिविधि जो उसी चीज को उपस्थापित करेगी जिसे ये अंग प्रतीक रूप में व्यक्त कर रहे हैं, क्योंकि अंग ऊर्जा-केन्द्रों के भौतिक प्रतीक मात्र हैं। वे अपरिहार्य मूलरूप नहीं हैं। रूपांतरित देह फिर अपने वास्तविक ऊर्जा- केन्द्रों द्वारा कार्य निष्पन्न किया करेगी, उनके उन प्रतीक रूप प्रतिनिधियों द्वारा नहीं जिनका कि पाशव-देह में विकास हुआ था। इसलिए पहले यह जानना जरूरी है कि सार्वभौम ऊर्जा में हमारा हृदय किस चेतना की अपूर्व यात्रा को प्रस्तुत कर रहा है, हमारा रुधिरवहन, हमारा मस्तिष्क, हमारे फेफड़े उसके

अंदर किस चीज के प्रतिरूप हैं। फिर उन मूल स्पंदों पर अधिकार होना आवश्यक है जिनके ये अंग प्रतीक हैं।

तत्पश्चात् धीरे-धीरे इन सब ऊर्जाओं को अपनी देह में एकत्रित कर प्रत्येक अंग को सचेतन ऊर्जा के एक केन्द्र में बदलने की आवश्यकता है, जो फिर प्रतीकात्मक गति को यथार्थ गति में बदल देगा। उदाहरणतया फेफडों की प्रतीकात्मक गति के पीछे एक यथार्थ गति है, जो तुम्हें हल्कापन प्रदान करती है, और तुम गुरुत्वाकर्षण से बचे रहते हो। और सब अंगों की भी यही बात है।

प्रत्येक प्रतीकात्मक गति के पीछे एक यथार्थ गति विद्यमान है। पर इस सबका यह अर्थ नहीं कि फिर पहचानने योग्य रूपाकृतियाँ ही नहीं रहेंगी। आकृति का निर्माण ठोस कणों से नहीं बल्कि गुणों से हुआ करेगा। शायद हम कह सकते हैं कि वह व्यावहारिक अथवा उपयोग से संबंध रखने वाली देह होगी, जो स्थूल भौतिक आकृति की वर्तमान स्थिरता के विपरीत सुनम्य और अस्थिर होगी, और इच्छा करते ही अल्पभार हो जायेगी। और जड़तत्त्व एक दिव्य अभिव्यक्ति बन जायेगा।

अतिमानसिक संकल्प अपने आंतरिक जीवन की पूरी सरगम को अपनी निजी रूपधातु में तदानुरूप परिवर्तन लाकर व्यक्त करने में समर्थ होगा, ठीक उसी तरह जैसे अभी हमारे भावावेशों के प्रभाव से हमारी मुखाकृति में परिवर्तन आ जाता है (बहुत ही कम और वो भी ठीक तरह नहीं)-देह होगी घनीभूत शक्ति जो संकल्प के आदेशानुवर्ती होगी। हम, एपिक्टेटस के ओजपूर्ण शब्दों में 'एक नन्ही सी आत्मा जिसे एक लोथ ढोनी पड़ रही है' न बने रह कर, एक सजीव देह में सजीव आत्मा होंगे।

अतिमानसिक चेतना के योग से केवल मानस और देह को ही नहीं बल्कि जीवन के तत्त्व तक को बदलना होगा। यदि हमारी इस मानसिक संस्कृति का कोई निजी विशेष लक्षण है तो वह है कृत्रिमता। प्राकृतिक रूप से यहाँ कुछ भी नहीं चलता।

'श्री अरविन्द का कहना है कि श्वास-प्रक्रिया के पीछे जो यह यथार्थ गति है, वही विद्युत् और चुम्बक के प्रभाव-क्षेत्रों को नियंत्रित करती है। प्राचीन योगियों ने इसे वायु, यानी प्राण-शक्ति , कहा है। यह श्वास-साधना अथवा प्राणायाम, जिसकी इतनी चर्चा है, वायु पर प्रभुत्व प्राप्त करने की ही एक प्रणाली है (अनेकों में से एक) जो अंततः गुरुत्वाकर्षण से मुक्त कर देती

www.the-comforter.org

है।'

हम एक बड़ी भारी ठगी के चक्कर में फंस गये हैं- हवाई जहाज, टेलीफोन, टेलीविजन और उन सब ढेर के ढेर यंत्रों ने हमारी असमर्थता पर पर्दा डाल रखा है... अपनी स्वाभाविक क्षमताओं तक की हमने अवहेलना कर दी और या तो हमारे आलस्य के कारण या जानकारी की कमी से, पीढ़ी दर पीढ़ी वे घटती जा रही हैं। बिल्कुल ही स्पष्ट, मूलगत सत्य को हम भुला बैठे हैं कि हमारे ये सब अद्भुत आविष्कार उन शक्तियों का भौतिक प्रक्षेप मात्र हैं जो कि हमारे अंदर मौजूद हैं - यदि उनका पहले से हमारे अंदर अस्तित्व न होता, तो हम इनका कभी आविष्कार न कर पाते। हम चमत्कारों का वह अविश्वासी बाजीगर हैं जिसका श्री अरविन्द ने जिक्र किया है। अपने देखने और सुनने का, एक जगह से दूसरी जगह जाने का, सारा काम मशीनों पर डाल कर, अब हम उनके बिना कुछ भी नहीं कर सकते। हमारी मानवीय संस्कृति बनी थी जीवन के आनंद के लिए। वही अब उन साधनों की दास हो गई है जो जीवन के उपभोग के लिए आवश्यक हो उठे हैं। हमारे जीवन की अवधि का साठ प्रतिशत भाग इन साधनों के उपार्जन में बीत जाता है और तीस प्रतिशत सोने में।

श्री माँ कहती हैं : यहाँ की असंबद्धता है ये सारे कृत्रिम उपकरण जिनका हमें उपयोग करना पड़ता है। बस, आवश्यक युक्तियों को जुटाने के लिए साधनसंपत्ति पास होनी चाहिए, फिर एक मूढ़मति भी अधिक शक्ति रखता है। लेकिन सच्ची दुनिया, अतिमानस की दुनिया में जितनी अधिक चेतना हो और वस्तुओं के साथ संपर्क हो, उतना ही संकल्प को तत्त्व पर अधिकार होता है और वह संकल्प के इशारे पर चलता है। वहाँ अधिकार एक सच्चा अधिकार होता है।

यदि तुम्हें कपड़े चाहिए तो उनके सर्जन के लिए शक्ति होनी आवश्यक है, वास्तविक शक्ति होनी चाहिए। यदि वह शक्ति तुम नहीं रखते हो तो बस रह गये नंगे के नंगे ! शक्ति की कमी को पूरा करने के लिए वहाँ कोई कृत्रिम उपाय नहीं है। यहाँ पर अधिकार लाखों में एक बार भी किसी सच्ची चीज की अभिव्यक्ति नहीं होता। यहाँ सब बेहद बेतुका है। यह अतिमानसिक 'अधिकार' किसी तरह का उत्कृष्ट जादू नहीं है, जादू जैसा कुछ नहीं है, वह एक अत्यधिक निश्चित प्रक्रिया है, उतनी ही नियमनिष्ठ और ब्योरेवार जितना कि एक रासायनिक प्रयोग।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

कोरोना संक्रमण काल में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग से संबल मिला

मैं करीब आठ महीने से ध्यान कर रहा हूँ और इस दौरान मेरे अहंकार में निरंतर वृद्धि होती गयी और धीरे धीरे नाम जप में कमी। मैं सोचता था की मनमानी करते रहो, गुरुदेव किसलिए हैं। कुछ होगा तो उनको संभालना ही पड़ेगा। घोर लापरवाही और अहंकार के फलस्वरूप मैं कोरोना पॉजिटिव हो गया। शुरुआत में गले में पीड़ादायक सूजन जो लगभग तीन दिन तक रही, खाने-पीने में भयंकर दिक्कत हो रही थी, गुरुदेव से दिन रात प्रार्थना की तो गले की समस्या ठीक हो गयी लेकिन चौथे दिन बुखार आ गया। मैंने डॉक्टर को दिखाना उचित नहीं समझा और ध्यान और नामजप चालू रखा। मुझे शुरू से ही मानसिक नाम जप करने में दिक्त आती थी जो और बढ़ गयी। गुरुदेव का वीडियो देखा जिसमे उन्होंने कहा कि जो भी परिवर्तन आएगा वो नाम जप से ही आएगा। गुरुदेव से प्रार्थना की- हे गुरुदेव समस्या बढ़ रही है, ध्यान नहीं लग पा रहा और नाम जप भी नहीं कर पा रहा हूँ, आप मार्गदर्शन कीजिये तो तुरंत ही ऐसी स्थिति बनी की डॉक्टर के पास जाना पड़ गया। बुखार आने पर डॉक्टर ने कोरोना जाँच की सलाह दी जो नेगेटिव आयी। मन में ग्लानि भाव आ रहा था कि डॉक्टर के पास जाना पड़ गया तभी गुरुदेव का वीडियो सामने आया जिसमें उन्होंने कहा की मैं नहीं कहता कि बाहर के डॉक्टर के पास मत जाओ। अंदर का डॉक्टर और बाहर का डॉक्टर दोनों को काम करने दो, तो थोड़ा मन हल्का हुआ। फिर थोड़ी सांस में दिक्कत और सूखी खांसी शुरू हुई, और साथ ही स्वाद का अनुभव होना बंद हो गया।

लगातार 5 दिन समस्या बनी रहने पर पुनः कोरोना जाँच करवाई गई जो पॉजिटिव आयी। मैं घबरा गया क्यूंकि पहली रिपोर्ट नेगेटिव आने के बाद मैं घर पर सबके साथ ही रह रहा था। मैंने गुरुदेव से प्रार्थना की। घर में बच्चे, बूढ़े, बीमार सभी हैं, मुझे ठीक होने में भले ही कुछ दिन ज्यादा लग जायें पर घर वालों की रक्षा करना और इतने दिनों में मेरे सम्पर्क में जो भी आये, वो मेरी वजह से कोरोना पॉजिटिव ना हो पाए।

पहले प्राइवेट हॉस्पिटल में दिखा रहा था लेकिन पॉजिटिव आते ही उन्होंने सरकारी हॉस्पिटल जाने को कह दिया। सांस में दिक्कत और कमजोरी बढ़ने लगी, सरकारी हॉस्पिटल

www.the-comforter.org

में दिखाया और खून की जाँचे और छाती का एक्सरे देखकर डॉक्टर ने कहा संक्रमण है। अभी तो घर जाकर दवाई लो लेकिन अगर सांस में दिक्कत होती है तो एडमिट होना पड़ेगा।

रात को 11 बजे ऐसा लगा जैसे किसी ने सीने पर पैर रख दिया और गला दबा दिया। तुरन्त उठकर हॉस्पिटल गया, जहाँ भर्ती कर लिया और कुछ इंजेक्शन दिये। धड़कन इतनी तेज कि बाहर सुनाई दे रही थी, पल्स रेट 130 से ऊपर। ये स्थिति दिन और रात कई दिनों तक बनी रही। सांस फूलना, सूखी खांसी, कमजोरी, कफ के साथ खून आना, बुखार, पेट में दर्द, किडनी में दर्द, कमर में दर्द और फिर दस्त लगना भी शुरू, दिमाग की नसों में खिंचाव और दर्द, शरीर पर लाल-लाल निशान।

वहाँ मुझे अपनी गलतियों और अहंकार भाव का अहसास होने लगा। मैंने प्रत्येक गलती के लिए गुरुदेव से क्षमा याचना की। गुरुदेव मुझे एहसास हो गया है कि किस वजह से आज मेरी इतनी हालत खराब हुई है। आप मुझे सद्बुद्धि प्रदान करे और इस समस्या से मुक्ति दिलाऐं।

धीरे-धीरे सारी परिस्थितियाँ मेरे अनुकूल होने लगीं। वहाँ हॉस्पिटल में दिन में तीन बार इंजेक्शन लगना, साथ में कई तरह की दवाइयाँ लेना। दिन में एक बार डॉक्टर का आना वो भी बस बहुत कम समय के लिए, एक मरीज को देखना और चले जाना। ना कोई सुनने वाला ना कोई परवाह करने वाला। दिन रात नए मरीजों का रोते चिल्लाते आना, महिलाएँ पुरुष सभी रो रहे थे, अब क्या होगा?

मेरे लिए शारीरिक रूप से बीमार और मानसिक रूप से खुद को संभालना सबसे बड़ी चुनौती थी। ऐसी स्थिति में मुझे सबसे ज्यादा लाभ सद्गुरुदेव सियाग जी के ध्यान करने से हुआ। लगातार कई दिनों तक ये समस्याएँ जस की तस बनी रहीं लेकिन दिमाग पूरी तरह से शांत। रिपोर्ट पॉजिटिव आने के करीब 8 दिन बाद ही वापस नेगेटिव रिपोर्ट आ गयी।

मेरा सभी से निवेदन है कि अगर ऐसी स्थिति में मानसिक रूप से सबल रहना है तो अपनी दिनचर्या में गुरुदेव सियाग के बताए सिद्धयोग को जरूर शामिल करें। मात्र 15 मिनट सुबह और शाम करना होता है, कोई जटिल प्रकिया नहीं है। मुझे ऐसी स्थिति में भी शांत देखकर साथ के मरीज भी प्रभावित हुए और सिद्धयोग के बारे में जानकारी लेकर गुरुदेव की फोटो प्राप्त की। गुरुदेव की असीम कृपा से घर परिवार, ऑफिस और साथ उठने बैठने वालों में से किसी को कोरोना नहीं हुआ, मुझे अपनी समस्त लापरवाहियों और गलतियों का एहसास होकर सद्बुद्धि प्राप्त हुई।

ऐसे परम दयालु समर्थ सद्गुरुदेव के पावन चरण कमलों में बारंबार नमन् करता हूँ।

-देवानन्द गहलोत
नागौर

www.the-comforter.org

Amazing Experience of a disciple from Spain.

Jai Gurudev, my greetings to all the brothers and sisters under the grace of Gurudev.

My name is Victoria Sosa Moriñigo, I am 57 years old, I live in Spain and here I want to narrate my wonderful experience due to Gurudev's blessings. I am really happy, full of joy and gratitude to Gurudev.

I had some problem with my eyes since 2008. The doctor told the name of the disease as Sjögren's syndrome. It is an auto-immune disorder in which the glands that produce tears and saliva are destroyed, causing dry mouth and eyes. I followed the treatment based on eye drops and even underwent a small operation in 2011 but never ever noticed any improvement. I used to periodically visit the doctor, every month or two months depending on the condition of the eyes, but these visits were interrupted in March 2020 due to Covid-19.

Well, I started Gurudev Siyag's meditation from December 2019, I was gradually suspending all the drops and medications because those drops only did me bad than good. Today, after about 6 months, I had a visit to the ophthalmologist; I really just went to check it out. The ophthalmologists could not believe the improvement in my eyes and eye sight; they spoke among

www.the-comforter.org

themselves of this miracle. Infinite thanks to Gurudev Shri Ramlal Ji Siyag.

The benefits that I have now because of healing of my eyes are many.I can go out without the need for sunglasses; I no longer have to worry about putting the drops almost every hour, drops that scratch my eyes. There is no longer the feeling that my eyes are like bags of sand. I feel free from these annoyances. Before they even took blood from me to prepare a urology serum for my eyes, not anymore.

Every time I have a deep and meaningful meditation, with a true feeling of love and service to Gurudev, with his image in my mind and heart.This is incredible. I feel infinite gratitude to Gurudev for the intense and divine Yogic Kriyas that I experience.

It is my request to everyone to experience your true Self and your true purpose by simply sitting in meditation for fifteen minutes twice a day and chant a simple three-word divine mantra in your mind. This meditation is absolutely free. You don't need to go anywhere and you don't need to change anything in your lifestyle for it.

And the benefits of this meditation are manifold. You can defeat all illnesses, addictions, fear, anxiety, irritability, and insanity. Although these are only bi-products of this yoga, the real goal is self-realization and divine transformation of human being. Infinite gratitude to Gurudev!!

-Victoria Sosa Moriñigo,
From Spain

www.the-comforter.org

स्पेन से विक्टोरिया सोसा के अनुभव का हिन्दी में अनुवाद

सद्गुरुदेव के चरणों में मेरा प्रणाम ! मेरा नाम विक्टोरिया सोसा है। मेरी आयु 57 वर्ष की है। मैं स्पेन में रहती हूँ। मैं आप सबको अपने जीवन का एक बहुत ही अद्भुत अनुभव बताना चाहती हूँ जो गुरुदेव की कृपा के कारण हुआ। मैं बहुत ही खुश हूँ।

2008 से ही मेरी आँखों में तकलीफ शुरू हो गई थी। डॉक्टरों ने इसे स्जोग्रेन सिन्ड्रोम बताया जो कि एक प्रकार का ऑटो इम्यून डिस्ऑर्डर है। जिसमें शरीर की ग्रंथियाँ जो आँसू और थूक बनाती हैं, वो नष्ट हो जाती हैं जिसके कारण मुँह और आँख सूख जाते हैं। मैंने इसके लिए डॉक्टरों के द्वारा बताए इलाज किऐ- आँखों में आई ड्रॉप्स डाली और 2011 में एक छोटा सा ऑपरेशन भी करवाया। फिर भी मेरी आँखों में जरा सा भी सुधार नहीं हुआ। फिर भी मैं हर दूसरे महीने डॉक्टरों के चक्कर काटती रही। डॉक्टरों के यहाँ के चक्कर मार्च 2020 में कोविड-19 के कारण रूके।

दिसम्बर 2019 से मैंने गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान करना शुरू किया और धीरे-धीरे सभी दवाईयाँ बंद कर दीं क्योंकि मुझे उनसे फायदे के बजाय नुकसान ही हो रहा था। आज 6 महीने के बाद जब मैं आँखों के डॉक्टर के पास गई तो मेरी आँखों को पूर्णतः ठीक देखकर उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ और वो आपस में इस चमत्कार के बारे में बातें करने लगे।

आज मैं गुरुदेव की अत्यंत आभारी हूँ कि उनकी कृपा से मैं इस असाध्य बीमारी से बिलकुल ठीक हो गई हूँ।

ये बीमारी ठीक हो जाने से अब मुझे कहीं बाहर जाने पर आँखों पर धूप का चश्मा नहीं लगाना पड़ता। अब मुझे हर घंटे पर आँखों में दवा डालने की चिंता नहीं करनी पड़ती, वो दवा जिन्होंने मेरी आँखों को अन्दर से खुर्दरा कर दिया था। अब मुझे अपनी आँखें रेत के थैले जैसी नहीं लगतीं। अब मैं चिंता मुक्त हो गई हूँ। डॉक्टरों ने मेरा खून यूरोलॉजी सिरम बनाने के लिए लिया था पर अब उसकी कोई जरूरत नहीं रही।

जब भी मैं ध्यान करती हूँ मेरा ध्यान गहरा और सार्थक लगता है। गुरुदेव के लिए मन और हृदय में सच्चा प्यार व सेवा जगती है। ध्यान में होने वाली अनेक यौगिक क्रियाओं के लिए गुरुदेव को मेरा अनन्त कोटि आभार।

मेरा सभी से अनुरोध है कि रोग मुक्ति एवं आत्मक्षात्कार के लिए प्रतिदिन 15 मिनट का ध्यान और संजीवनी मंत्र का जाप करें। गुरुदेव सियाग सिद्धयोग पूर्णतः निःशुल्क है। आपको न कहीं जाने की जरूरत है और न ही अपनी जीवनशैली में कोई बदलाव लाने की आवश्यकता है। गुरुदेव को मेरा अनन्त कोटि आभार।

-विक्टोरिया सोसा, स्पेन

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्रीगंगाई नाथाय नमः

14 THU

1996

विश्व-युद्ध

MARCH

Appointments

(1) प्रथम तथा द्वितीय दो बाइबलों के आपसी झगड़े के कारण लड़े गये। इस लिए दो शक्तियों की सीधी टक्कर थी।

(2) तीसरा विश्व-युद्ध त्रिकोणीय होगा। इसमें दोनों बाइबलों के साथ कुरान और उलझ जावेगी। ऐसा त्रिकोणीय युद्ध विश्व में पहले कभी नहीं हुआ। यह युद्ध सत्य और झूठ की अन्तिम और निर्णायक लड़ाई होगी।

हम वेदान्ती तो "अहिंसापरमो धर्मः" के सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं। परन्तु विश्व-युद्ध का अर्थ होता है, सम्पूर्ण मानव-जाति का आपसी संघर्ष। अतः भारत भी इस युद्ध से बच नहीं सकता। क्यों कि भारत तो सत्य का पुजारी है, इस लिए सत्य का ही साथ देगा।

1 PM

ॐ लाल
4/10/97, बीकानेर

ॐ श्रीगंगाई नाथाय नमः

आज भारत में जितनी तामसिकता है, उतनी किसी युग में नहीं रही। आज देश में जितना अविश्वास है उतना पहले कभी नहीं रहा। आज देश का हर व्यक्ति एक-दूसरे को ठगने का प्रयास कर रहा है।

कोई समझ नहीं पा रहा है, देश किस दिशा में आगे बढ़ रहा है। ईश्वर पर सही अर्थों में किसी का विश्वास रहा ही नहीं। हर व्यक्ति भविष्य के बारे में सर्वाधिक चिन्तित है। सभी लोग लोभ, लालच के वशीभूत होकर येन-केन प्रकारेण धन संग्रह में लगे हैं। ऐसे लोगों की संख्या देश में बहुत तेजी से बढ़ रही है। देश का आधे से ज्यादा धन इस वृत्ति के लोगों के पास अनाधिकृत रूप से काले धन के रूप में जमा किया हुआ पड़ा है। एक तरफ लोगों को खाने-पीने की मूलभूत जरूरत पूरी करने के लिए धन नहीं मिल रहा है, दूसरी तरफ खर्च करने को कोई जगह नहीं है। जब तक सरकार में बैठे लोग धार्मिक और चरित्रवान नहीं होंगे, देश का उत्थान असम्भव है।

मैं देख रहा हूँ ऐसी वृत्ति के लोगों का पतन प्रारम्भ हो चुका है। सन्तोषजनक की बात तो यह है कि इस बार यह कार्य ऊपर से प्रारम्भ हुआ है, अतः नीचे तक फैलने में अधिक देर नहीं लगेगी। किसी हद तक यह परिवर्तन नीचे तक पहुँच चुका है। यह बहुत ही शुभ लक्षण है।

ॐ लाल
10/10/97 बीकानेर

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

MARCH

वैदिक-धर्म अर्थात् हिन्दू-धर्म में गुरु का पद ईश्वर से भी महान माना गया है। इस सम्बन्ध में गुरु गीता में कहा है:—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

मैं नाथ मत का अनुयायी हूँ। मेरे मुक्तिदाता परमहृदय सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाई नाथ जी योगी आई-पंथी नाथ थे। कलियुग में नाथ मत के आदिगुरु योगेन्द्र श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी महाराज माने गये हैं। मैं उन्हीं के आदेश से पश्चिमी जगत में ज्ञान-क्रान्ति का नेतृत्व करूँगा।

भारत इस समय घोर तामसिकता में डूबा हुआ है। भारत के उत्थान के लिए सर्व प्रथम रजोगुण के विकास की आवश्यकता है। व्यवहारिक भाषा में भारतीयों की प्रथम आवश्यकता रोटी की है राम का स्थान दूसरे नम्बर पर है।

पश्चिमी जगत भौतिक-सुविधाएं भोगते-भोगते बहुत ही दुःखी हो चुका है। आज जितना अशान्त पश्चिमी जगत है उतना अशान्त ऐसा का कोई देश नहीं। आज उन्हें मात्र शान्ति की ही भूख बाकी बची है और शान्ति केवल राम अर्थात् ईश्वर तत्व ही दे सकता है।

क्योंकि यह काम केवल वैदिक-धर्म अर्थात् हिन्दू-धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जीने से ही सम्भव है। अतः मुझे कलियुग के आदि गुरु से आदेश मिला है कि मेरा कार्य विशेष रूप से पश्चिमी जगत को चेतन करने का है। उसी आदेश के कारण अब मैं प्राथमिक रूप से पश्चिमी जगत में ही कार्य करना चाहता हूँ।

इक्कीसवीं सदी मानव जाति के पूर्ण विकास का समय है और पूर्ण विकास की क्रियात्मक विधि केवल भारत ही जानता है। अतः अब भारत का कार्य प्रारम्भ होता है।

[illegible]
19/9/97
जोधपुर

→ जो "परमहंस पद" प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए रजोगुण की प्राप्ति ही परमकल्याण-प्रद है। बिना रजोगुण के क्या कोई सत्वगुण प्राप्त कर सकता है। बिना भोग का अन्त हुए, योग (मिलन) हो ही कैसे सकता है। बिना वैराग्य के त्याग कहाँ से आवेगा।

"स्वामी श्री विवेकानन्द जी"

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ents MARCH

which also said, ye men of Galilee, why stand ye gazing up into heaven? This same Jesus, which is taken up from you into heaven, shall so come in like manner as ye have seen him go into heaven."

In the above paragraphs reappearance of Jesus christ has been said :- "Shall so come in like manner as ye have seen him go into heaven." So, if Jesus christ reappears, it will be Thursday only.

25th December, 1997 is Thursday and the birthday of Jesus christ. Will he be reappear on his birthday? This secret is hidden in the heart of future. But if he is to be reappear on Thursday, then the time of 25th December 1997 is the best.

According to the prophecies of the Holy Bible Jesus christ must reappear before the end of the year 2000. If it happens then religious revolution is inevitable in the world. Therefore coming three years will prove revolutionary for the whole world.

(24/8/97)

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"सकल जगत में "खालसा" पंथ गाजे।
जगे धर्म "हिन्दू" सकल भंड भाजे"।। संत सद्गुरुदेव श्री "बिन्दु सिंह जी महाराज"

"शीघ्र ही चेतना के ऊर्ध्व-लोक से एक भागवत-शक्ति का अवतरण होगा, जो पृथ्वी पर स्थापित "मृत्यु" और "असत्य" के राज्य को समाप्त कर यहाँ भी "भगवान" के राज्य की स्थापना करेगी।"

"श्री अरविन्द"

The manifestation of the supramental upon earth is no more a promise but a living fact, a reality. It is at work here and one day will come when the most blind, the most unconscious, even the most unwilling will obliged to recognise it."

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"Sri Aurobind."

"One man's perfection still can save the world."

"Sri Aurobindo"

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

मानस की नीरवता

अतः हम एक नए देश की खोज में हैं, परन्तु यह बता देना ठीक होगा कि उस देश जिसे हम छोड़ रहे हैं और उसके जिसका अभी आविर्भाव नहीं हुआ, इन दोनों चेतना की अपूर्व यात्रा के बीच एक काफी कष्टकर निर्जन भूमि है। यह एक परीक्षा-काल है जो हमारे संकल्प की दृढ़ता के अनुसार कम या अधिक लंबा होता है।

परन्तु ध्यानलीन हो जाने का अभ्यास करना, इस समस्या का सच्चा समाधान नहीं है (यद्यपि शुरू-शुरू में गति प्रदान करने के लिए वह बहुत जरूरी है), क्योंकि शायद हम एक सापेक्ष नीरवता को तो प्राप्त होंगे, परन्तु ज्यों ही हम अपने कमरे या एकांतवास से बाहर पग धरेंगे, हम फिर से उसी पुरानी हलचल में जा पड़ेंगे, जहाँ अंतर और बाह्य के, आंतरिक जीवन और सांसारिक जीवन के बीच एक अनंत विच्छेद है।

हमें आवश्यकता है संपूर्ण जीवन की। हमें केवल एकांतवास में या छुट्टी और पर्व के दिन ही नहीं, बल्कि प्रतिदिन, प्रतिक्षण अपनी सत्ता के सत्य को अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है। उसका उपाय बस्ती से दूर, सानंद समाधि लगा कर बैठ जाना नहीं- संभव है कि अपने आध्यात्मिक एकांत में

जम कर हम कड़े पड़ जाये और बाद में विजयोल्लास सहित अपने आप को बाहर की ओर प्रवाहित करने में और उच्च प्रकृति की अपनी उपलब्धियों को जीवन पर लागू करने में हम कठिनाई अनुभव करें।

जब हम इस बाह्य साम्राज्य को अपनी आंतरिक विजयों में शामिल करने के लिए मुड़ेंगे तो देखेंगे कि हम ऐसे क्रियाकलाप के बहुत अधिक आदी हो चुके हैं जो केवल आत्मपरक है और भौतिक स्तर पर कोई असर नहीं रखता। उस दशा में बाह्य जीवन और देह का रूपांतर करने में बड़ी भारी मुश्किल पड़ेगी। अथवा हम देखेंगे कि हमारे कर्म हमारी आंतरिक ज्योति के अनुरूप नहीं हैं-अभी भी वे उन्हीं पुराने गलत रास्तों का अनुसरण करते हैं, जिनकी उन्हें आदत पड़ी हुई है, उन्हीं अपूर्ण प्रभावों के अधीन अब भी हैं, जिनका साधारणतया उन पर पहले वश था। हमारी बाह्य प्रकृति के अज्ञानपूर्ण यंत्र को हमारे

www.the-comforter.org

अंतर्वर्ती परम सत्य से पृथक् करने वाली दुःखमयी खाई पूर्ववत् बनी हुई है।... मानो हम एक अधिक विशाल, अधिक सूक्ष्म, दूसरे ही जगत् में बसते हों, और इस पार्थिव, जड़ जगत् पर हमारा दिव्य नियंत्रण, या हो सकता है किसी तरह का भी कोई नियंत्रण, न रहे।

अतः इसका इलाज एक ही है, कि मानस को नीरव करने का अभ्यास उस स्थान पर करें, जहाँ यह कार्य सब जगह की अपेक्षा कठिन प्रतीत होता है, अर्थात् बाजार में, बस में, अपने काम में, यानी सब जगह।

उन्हीं भीड़ भरी सड़कों पर दिन में बार बार पीछे पड़े शिकारी कुत्ते से बचते हुए शीघ्रता में भागने के बजाय हम सचेतन जिज्ञासु की भांति उसी मार्ग पर चल सकते हैं। महत्त्वहीन और क्षीण कर देने वाले विचारों के जमघट में, खोया-खोया सा, छिन्न-भिन्न जीवन व्यतीत करने की जगह, हम अपनी चेतना के बिखरे हुए तारों को समेट सकते हैं और प्रतिपल स्वयं पर केन्द्रित कार्य कर सकते हैं। तब जीवन में एक नई, बिल्कुल निराली, दिलचस्पी पैदा होती है, क्योंकि छोटी से छोटी परिस्थितियाँ भी विजय का सुयोग बन जाती हैं- अब हमें दिशा मिल गयी है और हम कहीं न जाने के बजाय, अब कहीं जा रहे हैं।

क्योंकि योग का अर्थ एक विशेष तरह से करना नहीं, बल्कि एक विशेष तरह का होना है।

अतः हम एक नए देश की खोज में हैं, परन्तु यह बता देना ठीक होगा कि उस देश जिसे हम छोड़ रहे हैं और उसके जिसका अभी आविर्भाव नहीं हुआ, इन दोनों चेतना की अपूर्व यात्रा के बीच एक काफी कष्टकर निर्जन भूमि है। यह एक परीक्षा-काल है जो हमारे संकल्प की दृढ़ता के अनुसार कम या अधिक लंबा होता है। परन्तु हम जानते ही हैं कि हमेशा से ही, एशिया, मिस्र अथवा यूनानी गायक ऑरफियस के दीक्षा-काल से लेकर, होली ग्रेल की खोज के काल तक हमारे अधिरोहण का इतिहास परीक्षाओं से भरा पड़ा है। प्राचीन काल में वे दीक्षाएँ विलक्षण होती थीं और ईश्वर साक्षी है कि गाजे-बाजे के साथ पत्थर की शवपेटी के अंदर प्रवेश करना अथवा चिता के सामने स्वयं अपना क्रिया-कर्म करा लेना कोई ऐसी कठिन बात नहीं थी।

अब इस युग में हम सार्वजनिक शवपेटियों और ऐसे जीवनों को जानते हैं जो एक प्रकार का कब्र में उतर जाना ही हैं। अतः उनसे बाहर निकलने का कुछ प्रयत्न करना उचित है। और फिर, यदि गौर से देखें तो कोई विशेष हानि नजर नहीं आती।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

भक्त प्रहलाद की कथा

(स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका के कैलिफोर्निया शहर में भाषण के दौरान यह कथा सुनाई-)

हिरण्यकश्यप दैत्यों का राजा था। देव और दैत्य यद्यपि एक ही पिता की संतान थे, पर वे सदैव परस्पर युद्ध में संलग्न रहते थे। दैत्यों को मानव जाति से प्रदत यज्ञ-भाग अथवा जगत् के शासन का कोई अधिकार न था। किन्तु कभी कभी वे अत्यन्त प्रबल हो जाते और देवताओं को स्वर्ग से बाहर निकाल, उनका सिंहासन छीन, स्वयं राज करने लग जाते थे। तब देवता इस ब्रह्माण्ड के सर्वव्यापी प्रभु विष्णु की प्रार्थना करते,और उनकी सहायता से उनकी विपदाएँ दूर जो जाती थीं। दैत्य स्वर्ग से निकाल दिये जाते और पुनः देव, राज करने लगते थे।

दैत्यराज हिरण्यकश्यप इसी भाँति एक बार अपने जातिबन्धु देवों पर विजय प्राप्त कर, स्वर्ग के सिंहासन पर आरूढ़ हो त्रिभुवन अर्थात् मानव एवं अन्य जीव-जन्तु द्वारा अध्युषित मध्यलोक, सुरधाम स्वर्गलोक और दैत्यभूमि पाताल पर शासन करने लगा। अब, उसने अपने को त्रिभुवन का स्वामी घोषित कर दिया और यह घोषणा करवा दी कि उसके सिवाय दुनिया में कोई ईश्वर नहीं है; इसलिए कहीं भी कोई विष्णु की पूजा न करे और त्रिभुवन में एकमात्र उसी की पूजा की जाए।

हिरण्यकश्यप के प्रहलाद नामक एक पुत्र था। अपनी शैशवावस्था से ही उसकी भगवान् विष्णु में परम अनुरक्ति थी। बाल्यकाल में ही उसकी इस विशुद्ध भक्ति के लक्षण देख, दैत्यराज हिरण्यकश्यप को भय हुआ कि जिस बात को वह संसार से ही जड़-मूल सहित नष्ट कर देना चाहता है, वही उसके अपने कुटुम्ब में जड़ जमाने का यत्न कर रहा है। अतः उसने अपने पुत्र को शंड और अमर्क नामक दो अत्यंत कठोर और अनुशासन प्रिय आचार्यों के सुपुर्द कर दिया, और उन्हें आज्ञा दी कि भविष्य में प्रहलाद के कानों में विष्णु का नाम तक न पड़े। दोनों आचार्य कुमार को अपने साथ घर ले आये और उसे उसके समवयस्क अन्य छात्रों के साथ रख कर शिक्षा देने लगे। किन्तु शिशु प्रहलाद शिक्षा में मनोयोग न दे, अपना सारा समय अन्य दैत्य बालकों को भगवान् विष्णु की उपासना सिखाने में ही बिताने लगा।

जब आचार्यों को यह ज्ञात हुआ तो वे अतिशय भयभीत हुए। उन्हें प्रतापी दैत्यराज के कोप का अत्यन्त भय था, इसलिए बालक प्रहलाद को इन कार्यों से परावृत करने के लिए वे यथाशक्ति चेष्टा करने लगे। किन्तु प्रहलाद के लिए तो विष्णु-नाम श्वास-प्रश्वास की भाँति स्वाभाविक था; स्वयं विष्णु की उपासना करना और अन्य जनों को उसकी प्रणाली सिखाना-यही उसका जीवन था। अतःवह अपने मार्ग से विचलित न हो सका। अपने दोष से बचने के लिए आचार्यों ने स्वयं हिरण्यकश्यप से यह भयंकर तथ्य निवेदन कर दिया कि प्रहलाद न केवल स्वयं ही विष्णु की उपासना करता है, वरन अन्य बालकों को भी उपासना सिखाकर कुपथगामी बना रहा है।

यह समाचार सुन दैत्यराज क्रोध से आगबबूला हो गया। उसने बालक प्रहलाद को अपने सामने बुलवाया। प्रथम उसने कोमल वाणी में उसे विष्णु की पूजा से विमुख कर यह समझाने का यत्न किया कि ब्रह्माण्ड में दैत्यराज हिरण्यकश्यप के अतिरिक्त कोई दूसरा ईश्वर नहीं है, इसलिए केवल उसी की पूजा की जाय। किन्तु बालक प्रहलाद पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा। वह पुनः पुनः यही कहता था कि

www.the-comforter.org

सर्वव्यापी, त्रिभुवनेश्वर भगवान् विष्णु ही एकमात्र उपास्य हैं, और दैत्यराज का राजस्व भी भगवान् विष्णु के इच्छाधीन है। अब दैत्यराज के क्रोध की सीमा न रही और उसने तत्काल प्रहलाद के वध की आज्ञा दे दी। दैत्यों ने तीक्ष्ण शस्त्रों से उसकी कोमल देह पर आघात किये, पर उसका चित्त विष्णु के ध्यान में इतना मग्न था कि उसे तनिक भी पीड़ा नहीं हुई।

दैत्यराज हिरण्यकश्यप को जब ज्ञात हुआ कि शस्त्र-प्रहार से प्रहलाद का बाल भी बाँका न हुआ तो वह अत्यन्त भयाकुल हो गया। किन्तु दानवोचित्त असत् प्रवृति के वशीभूत हो, उसने बालक प्रहलाद का वध करने के कई राक्षसी उपायों का अवलम्बन करना शुरू कर दिया।

उसने उसे हाथी के पैरों तले कुचल देने का आदेश दिया। किन्तु जिस प्रकार क्रुद्ध हाथी लोह-गोलक को कुचल नहीं सकता, उसी भाँति प्रहलाद का भी वह कुछ न बिगाड़ सका। जब इस उपाय से काम न चला तो दैत्यराज प्रहलाद को पहाड़ की चोटी से फेंकने की आज्ञा दी। इस आदेश का भी पालन हुआ; पर प्रहलाद के हृदय-कमल में भगवान् विष्णु निवास करते थे, इसलिए वह कोमल तृणांकुरों पर धीरे से गिरने वाले हलके फूल की भाँति पृथ्वी पर आ पड़ा। प्रहलाद के हृदय में भगवान् विष्णु की छवि स्थित थी, उसका कौन क्या बिगाड़ सकता था?

अंत में दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने आज्ञा दी कि पाताल से विशालकाय सर्पों का आह्वान किया जाए, और प्रहलाद को नागपाश में बद्ध कर समुद्र में फेंक दिया जाए। फिर उस पर बड़े-बड़े पहाड़ के समान स्तूपाकार चुन दिये जाएँ, जिससे तत्क्षण नहीं तो कालक्रम से उसका अंत हो जाए। इस प्रकार नृशंस व्यवहार किये जाने पर भी, बालक प्रहलाद अपने परम आराध्य विष्णु की 'हे त्रिभुवनेश्वर, हे जगत्पते, हे अनंत-सौन्दर्यनिधे' कहकर प्रार्थना करता रहा।

इस प्रकार संकट काल में विष्णु का ध्यान और चिन्तन करते करते बालक को आभास होने लगा कि स्वयं भगवान् विष्णु उसके निकट विद्यमान हैं-निकट ही नहीं वरन् वे उसकी आत्मा में अवस्थित हैं। धीरे-धीरे उसे प्रतीत होने लगा कि वह स्वयं विष्णु है और अग जग में सर्वत्र वही व्याप्त हो रहा है।

ज्यों ही प्रहलाद को यह अनुभूति हुई, नाग-पाश स्वतः ही टूट गये। पहाड़ चूर चूर होने लगे, समुद्र में ज्वार भाटा आने लगा और लहरों ने उसे कोमलता पूर्वक अपने सिर पर धारण कर, किनारे तक सुरक्षित पहुँचा दिया। प्रहलाद उस समय यह सब भूल गया कि वह एक दैत्य है और उसके पार्थिव शरीर है। उसे प्रतीति हो रही थी-वह ब्रह्माण्डस्वरूप है और विश्व की समस्त शक्तियों का आदि स्रोत है; इस जगत् में, प्रकृति में ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो उसे क्षति पहुँचा सके, वह स्वयं प्रकृति का स्वरूप है। इस प्रकार समाधि जनित अविच्छिन्न परमानन्द में कुछ काल व्यतीत होने पर शनैः शनैः उसे देह का भान हुआ और स्मरण होने लगा कि वह दैत्य कुलोत्पन्न प्रहलाद है। देह का भान होते ही उसे पुनः वह ज्ञान होने लगा कि उसके अन्दर और बाहर-चारों ओर ईश्वर की सत्ता है और उसे हर वस्तु में विष्णु रूप के दर्शन होने लगे।

दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने जब देखा कि उसके अनन्य शत्रु विष्णु के अनन्य भक्त-उसके पुत्र प्रहलाद के लिए प्रयुक्त सभी भौतिक उपाय विफल हो गये हैं तो वह भयग्रस्त और किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया।

उसने पुनः प्रहलाद को अपने समीप बुलवाया और मधुर वचनों से अपनी सलाह पर चलने का उपदेश देने लगा। किन्तु प्रहलाद पूर्ववत् ही उत्तर

www.the-comforter.org

देता रहा। दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने सोचा कि शिक्षा और वयोवृद्धि के साथ साथ प्रहलाद के ये बालोचित विचार बदल जाएँगे। इसलिए उसने उसे पुनःशंड और अमर्क के सुपुर्द कर उसे राजधर्म की शिक्षा प्रदान करने का आदेश दिया। किन्तु प्रहलाद की उसमें कोई रूचि न थी, और अवकाश पाते ही वह अपने सहपाठियों को विष्णु की उपासना का उपदेश देने लगता।

दैत्यराज हिरण्यकश्यप के कानों में, जब यह समाचार पहुँचा तो वह क्रोध में आपे से बाहर हो गया। उसने प्रहलाद को बुलाकर प्राणान्त की धमकियाँ दीं और उसके उपास्य विष्णु के प्रति हीनतम अपशब्द प्रयुक्त किये। किन्तु इसके उपरान्त भी प्रहलाद बार बार बलपूर्वक यही कहता गया कि भगवान् विष्णु चराचर के स्वामी हैं और अनन्त, अनादि, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान और एकमात्र आराध्य हैं। दैत्यराज हिरण्यकश्यप सक्रोध गरजकर बोला, ''अरे पापिष्ठ, यदि तेरा विष्णु सर्वव्यापी है तो क्या वह उस स्तम्भ में है?'' प्रहलाद बोला, क्यों नहीं !वे उस स्तम्भ में भी विद्यमान हैं।

लड़के की धृष्टता से क्रुद्ध हो दैत्यराज बोला, ''रे दुष्ट, मैं अभी इस खड़ग (तलवार) से तुझे यमसदन भेजा देता हूँ, देखूँ, कैसे तेरा विष्णु तेरी रक्षा करता है।''ऐसा कह कर दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने अपनी तलवार से उस स्तम्भ पर एक जोर का वार किया।

इसी क्षण उस स्तम्भ से वज्र-निर्घोष हुआ और भगवान् विष्णु, नृसिंह रूप धारण कर प्रकट हुए। सहसा यह भीषण रूप देखकर दैत्य क्षण भर के लिए भयभीत हुआ परन्तु अगले ही पल दैत्यराज हिरण्यकश्यप बलपूर्वक प्राणपण से बड़ी देर तक नृसिंह भगवान से युद्ध करता रहा, और अंत में भगवान् नृसिंह के हाथों पराभूत और निहत हो गया।

तब देवता स्वर्ग से आकर भगवान विष्णु की स्तुति करने लगे। प्रहलाद भी भक्ति-विह्वल हो प्रभु के चरणों में प्रणिपात कर, गदगद कण्ठ से उनका गुणगान करने लगा। तब भगवान् प्रसन्न हो प्रहलाद से बोले, ''वत्स प्रहलाद ! तुम निर्भय हो इच्छानुसार वर माँगो, तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो।'' प्रहलाद ने गद्गद स्वर में उत्तर दिया,''प्रभु, आपके दर्शन पाकर अब और कौन सी इच्छा अतृप्त रह गयी है? आप मुझे किसी प्रकार के ऐहिक या स्वर्गिक ऐश्वर्य का प्रलोभन न दिखाइए।'' पुनः भगवान् बोले, ''प्रहलाद, तुम्हारी निष्काम भक्ति देखकर मुझे तुमसे अत्यन्त प्रीति हो गयी है। हमारा दर्शन निष्फल नहीं होता, इसलिए, वत्स, कोई एक वर अवश्य माँग लो।''तब प्रहलाद ने उत्तर दिया, हे प्रभु,जो तीव्र आसक्ति अज्ञानियों की ऐहिक पदार्थों के प्रति होती है, वही मेरे हृदय में आपका स्मरण करते समय आपके प्रति हो।''

तब भगवान् ने कहा, ''प्रहलाद, यद्यपि मेरे परम भक्तों को इहलोक और परलोक में किसी वस्तु की आकांक्षा नहीं रहती है, तथापि मेरे आदेश से सदा मुझमें भक्ति रखते हुए, कल्पान्त तक तुम इस लोक का ऐश्वर्य-भोग और पुण्य कर्मों का अनुष्ठान करो और अन्ततः कालक्रम से देहपात होने पर तुम मुझे प्राप्त करोगे।'' इस प्रकार प्रहलाद को वर प्रदान कर भगवान् विष्णु अन्तर्ध्यान हो गये। ब्रह्मा, इन्द्र, देवगण आदि ने भी प्रहलाद को दैत्यराज अभिषिक्त कर अपने अपने लोक को प्रस्थान किया।

इस प्रकार अनीति और अधर्म के बढ़ने पर वह परब्रह्म सगुण साकार रूप में पृथ्वी पर अवतार लेता है और अधर्म का विनाश कर पृथ्वी का भार हल्का करता है।

भारत की पुण्य भूमि पर 24 नवम्बर 1926 को भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार लिया।

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...
कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

चीजों को देखना एक बात है और उन्हें अपने अंदर घुसने देना एकदम दूसरी बात है। साधक को बहुत-सी चीजों का अनुभव लेना होता है, उन्हें देखना और भली-भांति निरीक्षण करना होता है, उन्हें चेतना के क्षेत्र में ले आना होता है और यह जानना होता है कि वे क्या हैं। परंतु इसका कोई कारण नहीं कि तुम उन्हें अपने अंदर घुसने दो और अपने ऊपर अधिकार जमाने दो।

केवल भगवान् को या जो कुछ भगवान् के यहां से आता है उसको ही तुम्हें अपने अंदर प्रवेश करने देना चाहिये। यह कहना कि सभी प्रकाश अच्छा है, ठीक यह कहने के समान है कि सभी जल अच्छा है-अथवा यह कहना कि सभी निर्मल या स्वच्छ जल अच्छा है, परंतु यह बात ठीक नहीं हो सकती।

इसके पहले कि कोई यह कह सके कि यही सच्चा दिव्य प्रकाश है, उसे यह देखना ही होगा कि यह प्रकाश किस प्रकार का है अथवा यह कहां से आ रहा है अथवा इसके अंदर क्या है। मिथ्या प्रकाश भी हैं और भ्रम में डालनेवाली चमकें भी हैं, सत्ता के हीनतर स्थानों से संबंध रखनेवाले निम्न कोटि के प्रकाश भी हैं। अतएव साधक को इस विषय में खूब सावधान रहना चाहिये और उनके

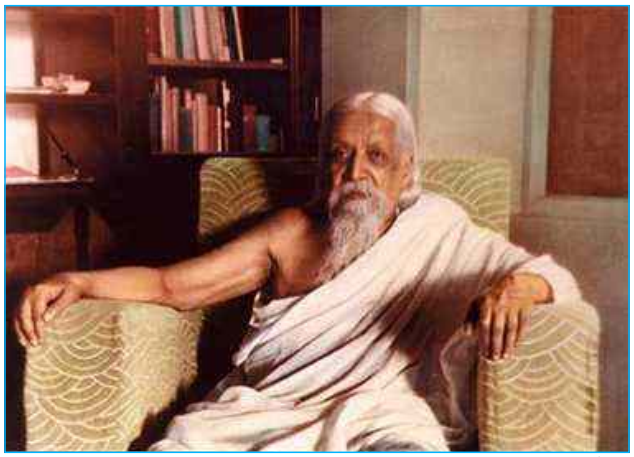

पार्थक्य को समझना चाहिये; सच्चा विवेक अंतरात्मा की बोध-शक्ति, विशुद्ध मन तथा अनुभूति का विकास होने पर प्राप्त होता है।

जो चीख तुमने सुनी वह तुम्हारे स्थूल हृदय में नहीं उठी थी, बल्कि हृदय में जो भावावेग का केंद्र है वहां उठी थी। दीवार गिर जाने का मतलब है तुम्हारी आंतरिक या बाह्य सत्ता के बीच की बाधा का दूर हो जाना अथवा कम-से-कम वहां की किसी एक बाधा का दूर हो जाना। अधिकांश मनुष्य अपनी साधारण बाहरी अज्ञानमयी सत्ता में निवास करते हैं जो आसानी से भगवान् की ओर नहीं खुलती किंतु उनके अंदर एक आंतरिक सत्ता भी है जिसे वे नहीं जानते और जो बड़ी आसानी से सत्य और ज्योति की ओर खुल सकती है। परंतु एक दीवार ने उन्हें उस आंतरिक सत्ता से अलग कर रखा है और वह दीवार अंधकार और अचेतनता की है।

जब यह दीवार गिर जाती है तब एक तरह की मुक्ति प्राप्त होती है और तुरंत उसके बाद ही तुम्हें जो शांति, आनंद और प्रसन्नता का अनुभव हुआ उसका कारण यही मुक्ति है। जो चीख तुमने सुनी है वह तुम्हारे प्राणमय भाग की चीख थी जो एकाएक दीवार के गिर जाने और एकदम उद्घाटन हो जाने के कारण अभिभूत हो गया था।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

ईश्वर आपके साथ है

'ईश्वर की खोज में आपकी दृढ़ लगन सफल होने के लिए आपमें व्यापक दृढ़ता, व्यापक संकल्प होना चाहिए।'

अपने से बाहर ईश्वर को खोज पाना असम्भव है। हमसे जो बाहर है उसे हमारी आत्मा ही देवत्व प्रदान करती है। हम ही सबसे बड़े मन्दिर हैं। जो हम अपने भीतर देखते हैं उसी के धुंधले प्रतिबिम्ब को हम मूर्तरूप देते हैं।

ईश्वर की खोज में आपकी दृढ़ लगन सफल होने के लिए आपमें व्यापक दृढ़ता, व्यापक संकल्प होना चाहिए। दृढ़ आत्मा वाले का कहना है–मैं समुद्र को पी सकता हूँ, संकल्प से पहाड़ को चूर कर सकता हूँ। इस प्रकार की ऊर्जा एवं संकल्प रखें, कठिन परिश्रम करें, आप मंजिल को प्राप्त कर लेंगे।

–स्वामी विवेकानन्द

www.the-comforter.org

मुख्यालयः– अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)–342001
संपर्क–0291–2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

कल्कि अवतार

''24 नवम्बर 1926 को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं है। श्री कृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनंद के लिए तैयार करता है। श्री कृष्ण आनंदमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनंद की ओर उद्बुद्ध (Inspire) करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।''

–महर्षि श्री अरविन्द

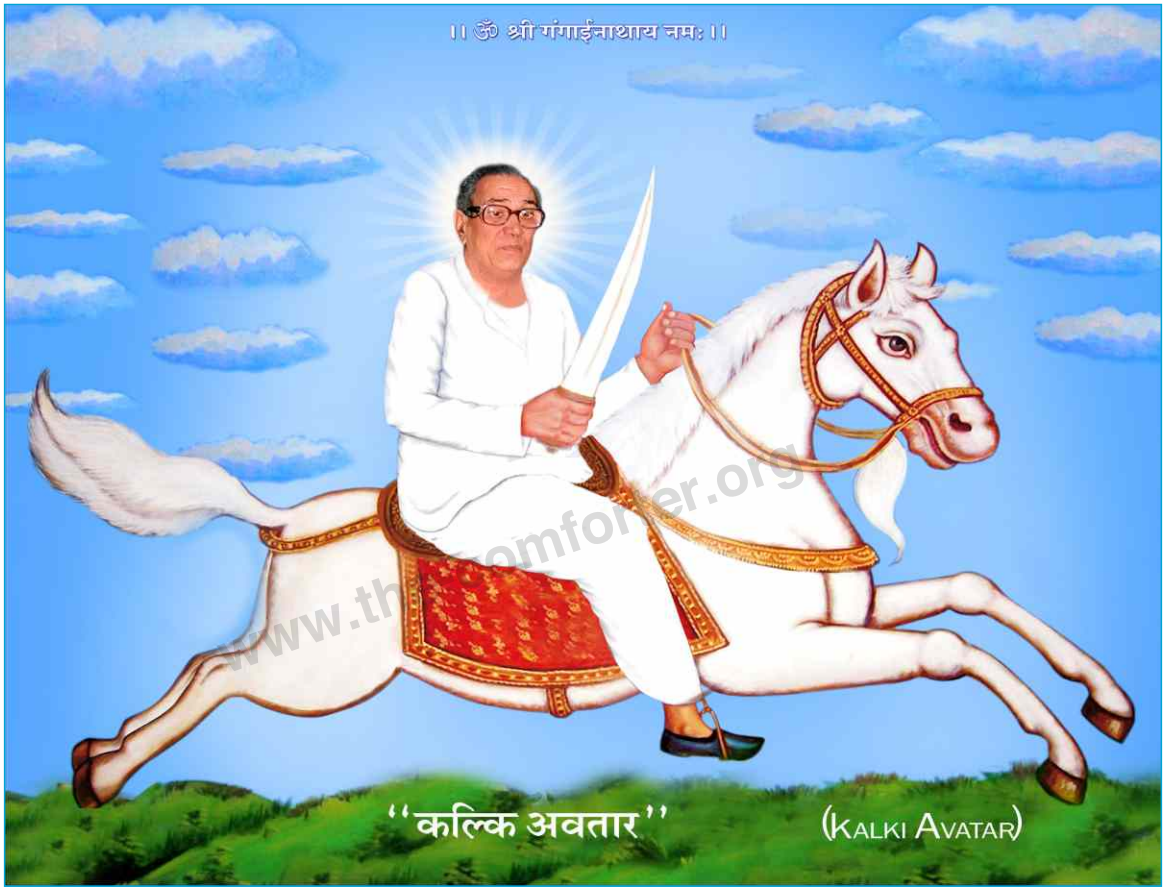

''कल्कि की एकमात्र तलवार ही पृथ्वी को एक उद्दण्ड आसुरी मानवता के भार से पवित्र कर सकती है।''

The Sword of Kalki can alone purify the earth from the burden of an obstinately Asuric humanity.

विशेष सूचना

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा विश्व में वैदिक दर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए स्थापित संस्था अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, उनके बनाए सिद्धांतों और मानकों के अनुसार अनवरत रूप से कार्य कर रही है।

प्रतिदिन विश्व भर में हजारों लोग संस्था की वेबसाइट और यू-ट्यूब चैनल से मंत्र दीक्षा प्राप्त कर रहे हैं। संस्था से हर महीने 'स्पिरिचुअल-साइंस' मासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही है। कोरोना और बदलती परिस्थितियों वश संस्था ने निर्णय लिया है कि अब यह पत्रिका संस्था की वेबसाइट और अन्य सोशल मीडिया पर ई-पत्रिका के रूप में उपलब्ध होगी। सभी साधक संस्था की वेबसाइट पर जाकर इस पत्रिका को पढ़ और शेयर कर सकते हैं।

पिछले लम्बे समय से कुछ लोग संस्था के विरोध में कुछ न कुछ लिखते रहते हैं, और नये साधकों को भ्रमित करने का प्रयास करते हैं। ऐसे लोगों की बातों में नहीं आयें। किसी भी प्रकार का संशय होने पर गुरुदेव द्वारा स्थापित संस्था अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम से संपर्क करें।

संस्था के निम्नलिखित प्रचार संसाधनों द्वारा आप मिशन की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं-

Website:
www.the-comforter.org
YouTube Channel:
Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Facebook:
Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Twitter: Gurudev Siyag
Instagram: Gurudev Siyag

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

अनुग्रहकर्ता-सद्गुरुदेव

ईसाई जगत् को अनुग्रह के युग की अभी जानकारी नहीं है। वे तो मात्र अपनी पुस्तकों के आधार पर उस युग की कल्पना करते हैं। जब उन पर अनुग्रह होगा,तब वे पूर्ण सत्य से अवगत होंगे। इस संबंध में स्वामी मुक्तानन्द जी ने अपनी पुस्तक 'कुंडलिनी जीवन का रहस्य' में कश्मीरी शैव सिद्धान्त का वर्णन करते हुए लिखा है- 'कश्मीरी शैव- सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर के पंचकृत्य है- सृष्टि, स्थिति, लय, तिरोधान और अनुग्रह। पाँचवा कृत्य जो अनुग्रह है, उससे मानव को अपनी व विश्व की यर्थाथता का बोध होता है। कश्मीरी शैव- सिद्धान्त में गुरु को पाँचवा कार्य सम्पन्न करने वाला अर्थात् अनुग्रहकर्ता के रूप में माना गया है। शिवसूत्र विमर्शिनी कहती है:-

'गुरुर्वा पारमेश्वरी अनुग्रहिका शक्तिः' 'गुरु परमेश्वर की अनुग्रह शक्ति है'। वह शक्ति की पुरातन प्रक्रिया द्वारा अनुग्रह प्रदान करता है, जिससे साधक की सुषुप्त कुण्डलिनी क्रियाशील हो जाती है।' बाइबल में जिस पवित्रात्मा के बपतिस्में '(शक्तिपात दीक्षा) की बात कही गई है जब वह उन्हें मिलने लगेगी, तब ईसाई जगत् को अनुग्रह की वास्तविकता का ज्ञान होगा।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

'मानवता में सतोगुण का उत्थान एवं तमोगुण का पतन करने संसार में अकेला ही निकल पड़ा हूँ। मुझ पर किसी भी जाति-विशेष, धर्म-विशेष तथा देश-विशेष का एकाधिकार नहीं है।'

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

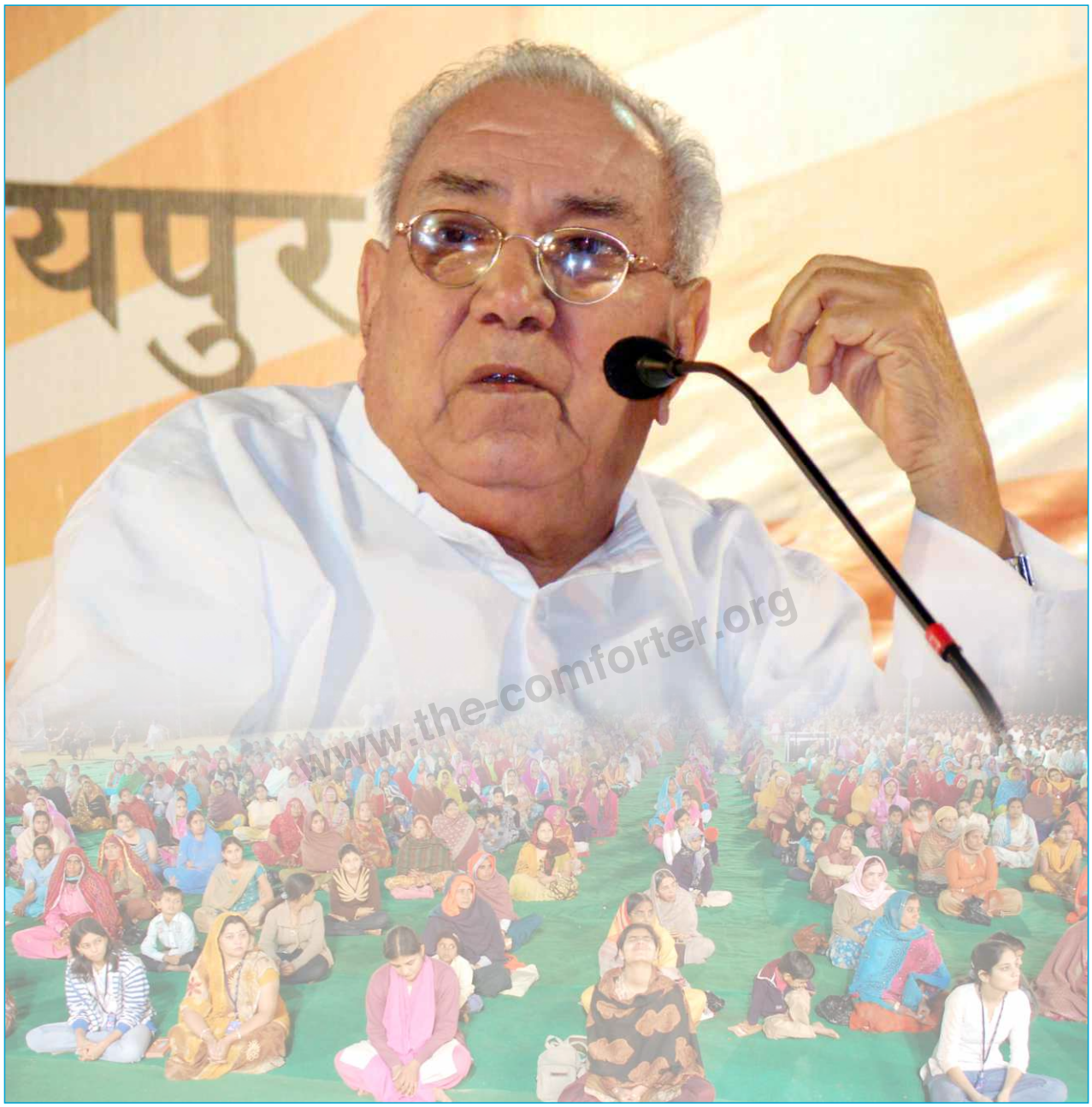

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।